हिंदी दिवस पर भव्य आयोजन — मातृभाषा के सम्मान में संकल्प का दिन

14 सितम्बर 2025, को हिंदी दिवस क अवसर पर द आई सी ऍफ़ ए आई विश्वविद्यालय रायपुर, कुम्हारी के कला एवं मानविकी विभाग द्वारा एक काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया । कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ माँ सरस्वती के पूजन **एवं** दीप प्रज्ज्वलन **के साथ** किया गया। इस शुभ अनुष्ठान के द्वारा ज्ञान और भाषा के देवी की कृपा प्राप्त करने का संकल्प लिया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत में माननीय अतिथियों का पुष्प गुच्छ एवं पुस्तक भेंट कर स्वागत किया गया, यह परंपरा न केवल हमारे सांस्कृतिक मूल्यों का परिचायक है, बल्कि यह अतिथियों के प्रति हमारी विनम्रता और आदर की भावना को भी दर्शाती है।

इस अवसर पर माननीय कुलपति डॉ. एस. डी. पाण्डेय जी ,आदरणीय कुलसचिव **डॉ.** मनीष उपाध्याय जी, डीन अकादमिक डॉ**.** के. किशोर कुमार जी, सभी विभागाध्यक्षगण, संकाय सदस्य एवं विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का उद्देश्य हिंदी भाषा के महत्व को पुनः स्मरण कराते हुए विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में भाषायी चेतना का संचार करना था। इस अवसर पर सभी विशिष्ट अतिथियों ने अपने-अपने विचार साझा किए और हिंदी भाषा के वैश्विक प्रभाव, समृद्ध साहित्यिक परंपरा, तथा सामाजिक समरसता में इसके योगदान को रेखांकित किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों द्वारा उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए काव्य पाठ आयोजित किया गया , जिसमे विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों ने स्वरचित एवं हिंदी के जाने-माने कवियों की भावनात्मक एवं प्रेरणादायक रचनाएँ पढ़ी। सभी कविताओं ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रस्तुतियाँ हिंदी के प्रति उनकी आस्था और समर्पण को दर्शा रही थीं।

माननीय कुलपति महोदय ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदी दिवस के इस गरिमामयी अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए माननीय कुलपति डॉ. एस. डी. पाण्डेय जी ने कहा, कि हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी सभ्यता, संस्कृति और आत्मा की अभिव्यक्ति है। यह वह भाषा है, जो जनमानस के हृदय से निकलती है और सीधे आत्मा से संवाद करती है। जब हम हिंदी में सोचते हैं, बोलते हैं और लिखते हैं, तो हम अपने इतिहास, अपनी परंपराओं और अपनी अस्मिता से जुड़ते हैं।उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हिंदी को केवल एक विषय के रूप में नहीं, बल्कि जीवनशैली के रूप में अपनाने की आवश्यकता है। वैश्वीकरण के इस युग में जबकि अंग्रेज़ी का प्रभुत्व अनेक क्षेत्रों में देखा जा सकता है, तब भी हिंदी ने अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज की है और वह निरंतर विश्वपटल पर अपना स्थान सुदृढ़ कर रही है।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि किसी भी देश की प्रगति उसकी मातृभाषा के विकास से जुड़ी होती है। जब कोई राष्ट्र अपनी भाषा का आदर करता है, तभी वह सांस्कृतिक रूप से सशक्त बनता है। आज हमें यह संकल्प लेना होगा कि हम हिंदी के प्रयोग को केवल औपचारिकता तक सीमित न रखें, बल्कि इसे अपने व्यवहार, अपने कार्य और अपने अभिव्यक्तियों में स्थान दें।

कुलसचिव महोदय ने विद्यार्थियों को विशेष रूप से संबोधित करते हुए कहा प्रिय विद्यार्थियों, आप देश का भविष्य हैं। यदि आप हिंदी के साथ जुड़ते हैं, उसके साहित्य को पढ़ते हैं, उसमें सृजन करते हैं , तो आप न केवल भाषा को समृद्ध करते हैं, बल्कि राष्ट्र की सांस्कृतिक नींव को भी मजबूत करते हैं। आपको तकनीक, विज्ञान और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ना है, परंतु अपनी भाषा और जड़ों को कभी न भूलें।

कार्यक्रम का संचालन अत्यंत गरिमामय एवं अनुशासित ढंग से हुआ, जिससे उपस्थितजन मंत्रमुग्ध हो उठे। अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

यह आयोजन न केवल भाषा के प्रति सम्मान व्यक्त करने का अवसर बना, बल्कि यह एक नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने का सार्थक प्रयास भी सिद्ध हुआ।इस पुरे आयोजन की संकल्पना,विभाग के विद्यार्थी जीवेन्द्र कुमार,सिद्दार्थ बारेकर, एवं देवांशु थवाईत, सहित विभाग के सभी छात्र –छात्राओं ने योगदान दिया ।अंत में अतिथियों द्वारा सभी प्रतिभागियों को स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन अत्यंत गरिमामय एवं अनुशासित ढंग से हुआ, जिससे सभी उपस्थितजन मंत्रमुग्ध हो उठे। धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।